आजीविका संवाद

अंक - 4

झारखण्ड स्टेट लाईवलीहुड प्रमोशन सोसाईटी की त्रैमासिक पत्रिका.....

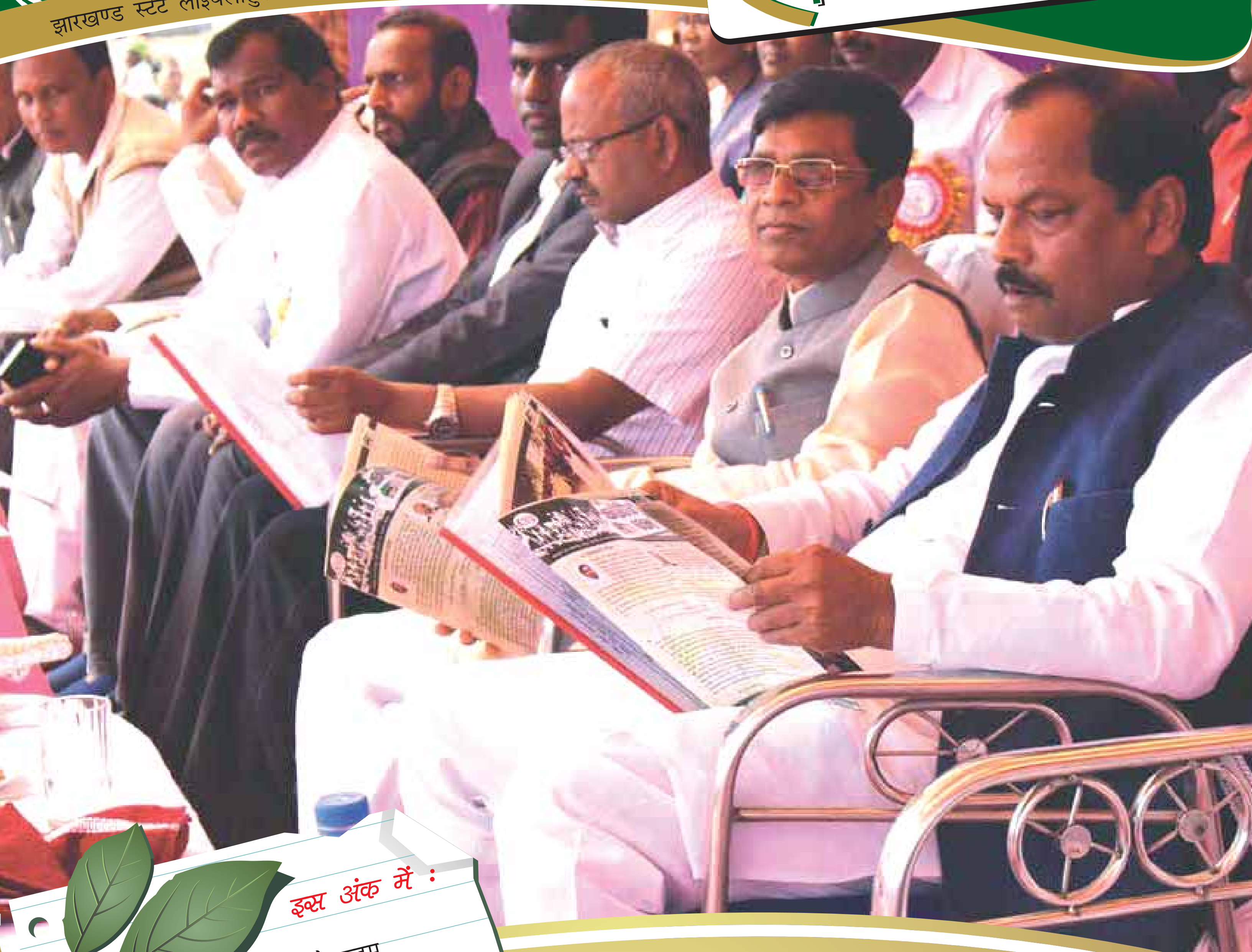

इस अंक में :

- ✓ आजीविका मिशन के बढ़ते कदम
- ✓ जहां चाह वहां राह
- ✓ समूह से मिला जीने का आसरा
- ✓ दिल से
- ✓ हौसलों का समूह
- ✓ खूंटी में कौशल प्रशिक्षण
- ✓ चित्रमय समाचार
- ✓ सहभागी तरीके से गरीबों की पहचान ...
- ✓ योजना बनाओ अभियान

माननीय मुख्यमंत्री, झारखण्ड सरकार श्री रघुवर दास एवं केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्य मंत्री, श्री सुदर्शन भगत उपरोक्त तस्वीर में झारखण्ड स्टेट लाईवलीहुड प्रमोशन सोसाईटी की पत्रिका आजीविका संवाद का अवलोकन करते हुए। महिला स्वयं सहायता समूह के कार्यक्रम में शिरकत करने पहुंचे माननीय मुख्यमंत्री ने महिला समूह के जरिए हो रहे तरक्की की जमकर सराहना की। महिला दिवस के अवसर पर लोहरदग्गा में आयोजित इस कार्यक्रम में हजारों की तादाद में स्वयं सहायत समूह की महिलाओं ने भी भाग लिया । इस अवसर पर ग्रामीण विकास विभाग के प्रधान सचिव श्री एन एन सिन्हा भी उपस्थित थे ।

झारखण्ड राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के बढ़ते कदम

झारखण्ड राज्य में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत जमीनी स्तर पर गरीब महिलाओं की सशक्त संस्थाएँ (SHGs, VOs, CLFs) बनाकर, गरीब परिवारों को लाभप्रद स्वरोजगार, हुनरमंद मजदूरी के अवसर उपलब्ध कराकर उन्हें समर्थ बनाते हुए गरीबी को कम करने की कोशिश की जा रही है, जिसके परिणामस्वरूप गरीब परिवारों की आजीविका में उल्लेखनीय वृद्धि हो रही है। आजीविका मिशन के तहत गरीब परिवारों की महिलाओं का क्षमतावर्धन किया जा रहा है ताकि वे अपने बूते गरीबी से बाहर निकल सके। गरीबी को जड़ से समाप्त करने के लिए झारखण्ड स्टेट लाईवलीहुड प्रमोशन सोसाईटी लगातार महिलाओं को समर्थ बनाने में जुटी है। झारखण्ड राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के जरिए हर ग्रामीण गरीब परिवार की एक महिला को स्वयं सहायता समूह में जोड़ा जा रहा है। इसी कड़ी में महिलाओं के क्षमतावर्धन एवं कौशल विकास के लिए प्रशिक्षण एवं वित्तीय समावेशन भी किया जा रहा है। गरीबों के अनुकूल वित्तीय क्षेत्र भी तैयार किया जा रहा है ताकि गरीब महिलाओं को बैंक लोन आसानी से मिल सकें और अपनी आजीविका के विकास के रास्ते पर वह आगे बढ़ सके। आज पूरे राज्य भर में हजारों की तादाद में महिलाएं आजीविका मिशन से जुड़कर गाँव की दूसरी गरीब महिलाओं को गरीबी के कुचक्र से बाहर निकालने के लिए काम कर रही है। अगले 6 से 8 साल में स्वंय सहायता समूह और गरीब महिलाओं की सघनबद्ध संस्थाओं के जरिए राज्य के सभी गाँवों को गरीबी से उबारने का एजेंडा तय करना है ताकि गरीबों के लिए चलाया जा रहा यह मिशन, गरीबों के द्वारा चलाया जाने वाला उन्हीं का मिशन बन जाए और राज्य से गरीबी के कुचक्र को हमेशा के लिए खत्म किया जा सके।

- झारखण्ड राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत 12 जिलों के 47 प्रखण्डों के 2952 गाँवों में मिशन को कार्यान्वित किया जा रहा है। अब तक 2.5 लाख से ज्यादा गरीब ग्रामीण परिवारों की महिलाओं को करीब 20,000 स्वंय सहायता समूहों में जोड़ा जा चुका है।
- राज्य भर में 968 ग्राम संगठन और 22 क्लस्टर संगठन का निर्माण किया जा चुका है।
- अब तक 15,475 स्वंय सहायता समूहों को चक्रिय निधि के रूप में 23.10 करोड़ रूपये उपलब्ध कराया जा चुका है। वहीं 12,343 स्वंय सहायता समूहों को सामुदायिक निवेश निधि के तहत 70.52 करोड़ रूपये उपलब्ध कराया जा चुका है।
- 5,073 स्वंय सहायता समूह को बैंक लिंकेज के जरिए 25.36 करोड़ रूपये उपलब्घ कराया जा चुका है।
- ग्रामीणों और समूह के सदस्यों को बैंक में होने वाली दिक्कतों को दूर करने हेतु राज्य भर के करीब 122 बैंक शाखओं में बैंक सखी को पदास्थापित किया गया है।
- ग्रामीण महिलाओं को खेती और पशुपालन में तकनीकि सहयोग के लिए परियोजना की तरफ से आजीविका कृषक मित्र और पशु सखी के रूप में समूह के सदस्यों को प्रशिक्षित किया गया।
- पशु सखी मॉडल को सांसद आदर्श ग्राम योजना के तहत बेस्ट प्रैक्टिस के रूप में चुना गया और पुरस्कृत भी किया गया है। राज्य भर में करीब 6,776 परिवारों को पशु सखी बकरी पालन में सहयोग कर रही है।
- करीब 86,759 परिवारों के साथ एससीआई तकनीक से खेती एवं 6100 परिवार के साथ लाह की खेती को बढ़ावा दिया गया।
- राज्य भर में सूक्ष्म उद्योग को बढ़ावा देने के लिए 112 MEC को प्रशिक्षित किया जा चुका है। MEC के सहयोग से करीब 800 लघु उद्योग को स्थापित एवं मजबूत किया जा रहा है।
- दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना एवं रोशनी परियोजना के तहत राज्य के 1891 ग्रामीण युवक-युवतियों को कौशल प्रशिक्षण दिया जा चुका है। इनमें से करीब 1062 को प्रशिक्षणोपरांत नौकरी उपलब्ध कराया जा चुका है।

जहां चाह वहां राह

जहां चाह वहां राह के कथन को साबित कर दिखाया है पाकुड़ के लिट्टीपाड़ा प्रखंड, कोरियोडिह गाँव की महिला समूह की सदस्यों ने इन महिलाओं के लिए स्वयं सहायता समूह वरदान है।
समूह मे जुड़ने से पहले सभी सदस्य गृहिणियां थी। उनके पति खेती बाड़ी तथा मजदूरी का काम किया करते थे। सभी के घर की आर्थिक स्थिति काफी खराब थी। उन सब में पुतुल देवी की स्थिति तो और भी खराब थी। पुतुल देवी के विवाह के 7 वर्ष के बाद ही उनके पति का देहांत हो गया। ससुराल में काफी दयनीय स्थिति होने के कारण वह अपने मायके करियोडिह मे ही आकर रहने लगी। उसके माता पिता ने उसे सहारा तो दिया पर इनमें अपने बेटी और उसके बच्चों के सामान्य जरुरतों को भी पूरा करने की क्षमता नही थी। उसी बीच करियोडिह गाँव में झारखण्ड स्टेट लाईवलीहुड प्रमोशन सोसाईटी द्वारा 2013 मे आजीविका स्वंय सहायता समूह का गठन शुरु हुआ। शुरु-शुरु में सभी महिलाओं के मन में समूह के प्रति गलत अवधारणायें थी लेकीन सीआरपी दीदी के समझाने तथा समूह से होने वाले लाभ से अवगत कराने पर सभी महिलाएं सितम्बर 2013 में समूह से जुड़ी।

पहले इन महिलाओं को अक्सर अपने परिवार की छोटी-छोटी जरुरतों को पूरा करने के लिए महाजन से 10 से भी ज्यादा फीसदी मासिक ब्याज दर पर कर्ज लेना पड़ता था, लेकिन समूह ने इन्हे महाजन से छुटकारा दिला दिया। कुछ महीने बाद इनके समूह को राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत चक्रीय निधि प्राप्त हुआ। पुतुल देवी ने समूह से कुछ ऋण लेकर ठेला पर नास्ता, बिस्किट आदि पास के सरकारी विद्यालय के सामने बेचना शुरु किया जिससे उन्हे 600-700 रू की मासिक आमदनी होने लगी। सनोखा देवी, रम्भा देवी, सुमंतरी देवी, गुड़िया देवी, रीना देवी ने भी समूह से ऋण लेकर अपनी-अपनी जरुरतों को पुरा किया। इसी बीच अगस्त 2014 मे इनके गाँव मे एमईसी संजय कुमार तथा सरोज कुमार साहा द्वारा स्वंय सहायता समूह का भ्रमण किया गया। दुर्गा आजीविका स्वंय सहायता समूह के बैठक में एमईसी ने कुछ सदस्यों को कैटरिंग ग्रुप बनाने का सलाह दिया। तथा उन्हें समझाया कि वे सामाजिक कार्यक्रमों, सरकारी कार्यालयों, अन्य कार्यक्रमों में भोजन तथा नाश्ता बनाकर अच्छा मुनाफा कमा सकती हैं और उन्हें यह भी बताया कि एमईसी इस कार्य में नियमित उनकी सहायता करेगें। एमईसी की बातों से पुतुल देवी काफी प्रभावित हुई और वह कैटरिंग ग्रुप बनाने को तैयार हो गई। लेकिन कोई अन्य सदस्य इसके लिए तैयार नही हुई क्योंकि उन्हे लगता था कि महिलाओं का कैटरिग ग्रुप नही चलेगा और गाँव वाले भी क्या कहेगे। इसके बाद एमईसी ने गाँव मे कई बार जाकर कुछ सदस्यों को इस कार्य हेतु इच्छुक होने के लिए प्रेरित किया। जिसके बाद पुतुल देवी के अलावा सनोखा देवी, रम्भा देवी, सुमंतरी देवी, गुड़िया देवी, रीना देवी कैटरिग ग्रुप बनाने को तैयार हो गई । कैटरिंग ग्रुप की शुरूआत 7 अक्टुबर 2014 को किया गया। उसी दिन करियोडिह मे ग्राम संगठन के प्रशिक्षण कार्यक्रम में ग्रुप को भोजन बनाने का अवसर मिला। जिसमें उन्हे 240 रु का लाभ हुआ। वर्त्तमान में यह कैटरिंग ग्रुप कई कार्यक्रमों में भोजन तथा नाश्ता बनाकर लाभ कमा रहा है। इसके अलावा लिट्टीपाड़ा के वार्षिक मेला में भी एक दिवसीय स्टॉल लगाया जिससे 1430 रु का लाभ हुआ था। सूक्ष्म उद्योग सलाहकार द्वारा इस कैटरिंग ग्रुप को अन्य सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है, ताकि इसके सदस्यों को और अधिक लाभ मिल सके।

समूह से मिला जीने का आसरा...

यात्रा वृतांत

- कुमार विकास

रांची से डालटनगंज मुख्य पथ पर स्थित सतबरवा से करीब 8 किमी की दूरी कच्चे रास्ते और घने जंगलों के बीच से पार करते आज हमारी टीम पहुंची है रब्दा पंचायत के रब्दा गाँव के फुलवरिया टोला में । फुलवरिया टोला अंतर्गत आदिम जनजाति के करीब 35 परिवार इस टोला में रहते हैं । सभी 35 परिवार परहिया आदिम जनजाती के है, यहां मैं आपको ये बता दूं कि ये पहाडिया जनजाति से अलग है । परहिया जनजाति के लोगों की स्थिति बहुत खराब है, ये अति गरीब है । इनके परिवार की आर्थिक हालत का अंदाजा आप इनके बच्चों की तस्वीर से लगा सकते हैं आजीविका मिशन के तहत रब्दा गाँव में आदिम जनजाति की अती गरीब महिलाओं का दो स्वयं सहायता समूह है । परहिया टोला के गणेश आजीविका स्वयं सहायता समूह की महिला सदस्यों से हमारी टीम ने मुलाकात की उस बातचीत का कुछ भाग आपसे साझा कर रहा हूं । इस स्वयं सहायता समूह में कुल 12 सदस्य है और सभी परहिया जनजाति के है । हमारे पहुंचने पर समूह की सभी महिलाओं ने गोलाकर में बैठकर हमार अभिवादन किया । हमारी टीम ने फिर समूह की दीदी लोगों से बातचीत शुरू की । इस आदिम जनजाती के महिला समूह की एक सदस्य ने हमें बताया कि जब आजीविका मिशन से सीआरपी दीदी समूह बनाने आई तो हम बहुत डरे हुए थे, हमलोग तो समूह में जुड़ने के लिए मना कर दिये थे और इसी वजह से सिर्फ 7 परहिया दीदी ही समूह से जुड़ी और वही से गणेश आजीविका महिला स्वयं सहायत समूह की शुरूआत हुई । इस समूह की ज्यादातर सदस्य आजीविका के रूप में बांस के पंखे, झाडू और टोकरी बनाने का काम करती हैं ।

रब्दा गाँव की सक्रिया महिला सुषमा देवी ने हमें बताया कि समूह बनने से पहले परहिया जनजाति के परिवार की स्थिति बहुत दयनीय थी, सब महिलाएं खेतीहर मजदूरी का काम करने 3 महीने के लिए बिहार चली जाती थी, बाकी के 9 महीने जैसे तैसे जिंदगी काटती थी । सुषमा ने बताया कि ज्यादातर समूह के सदस्य महाजन के जाल में कर्ज लेकर फंसे हुए थे । समूह बनने के बाद इनकी स्थिति में बहुत सुधार हुआ है और सबसे खुशी की बात ये है कि आज की तारीख में समूह की सभी दीदी महाजन के जाल से बाहर निकल चूकी हैं, समूह ने इन्हें नई जिंदगी दी है ।

गणेश आजीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य सुनीता देवी बताती है कि जब सीआरपी दीदी समूह बनाकर वापस गई, हमलोग समूह की बैठक ठीक से करने लगें तो फिर से 5 और दीदी समूह से आकर जुड़ी । सुनीता देवी के मुताबिक समूह से जुड़कर

सभी महिलाओं का जीवन आसान हो गया है, समूह से लोन लेकर अब वे अपनी छोटी-छोटी जरूरतों को पूरा कर रही हैं । सुनीता मुस्कुराती हैं, फिर बोलती है कि आज समूह की वजह से हमारा बच्चा स्कूल में पढ़ रहा है और हमें मजदूरी करने बाहर नहीं जाना पड़ रहा है । सुनीता समूह से पैसे लेकर बकरी पालन भी कर रही है ।

बातचीत के दौरान एक बुजुर्ग सदस्य मानती देवी ने बताया कि समूह की वजह से आज वो हमारे बीच में है, अगर तबीयत खराब रहने के दौरान उन्हें समूह से दस हजार रुपये कर्ज नही मिला होता तो वह जिंदा नही बच पाती । मानती देवी की बात को बीच में रोकते हुए लीलीवती देवी ने बताया कि समूह ने मुझे महाजन का कर्ज चुकता करने लायक बनाया वरना मैं तो जिंदगी भर मजदूरी करते रहती। समूह हमारे लिए भगवान जैसा है । वहीं गणेश आदिम जनजाती महिला स्वयं सहायता समूह की सदस्य कालो देवी झाडू बनाते हुए हंसती है, उनकी आंखों में गरीबी दूर करने की चमक साफ दिखाई दे रही थी, कालो देवी ने हमारी टीम को बताया कि आज समूह से कर्ज लेकर वो झाड़ू, टोकरी और पंखा बनाने का काम कर रही है । समूह से कर्ज लेकर दो बकरी खरीदी थी वो अब पांच हो गई है हमारी हालत तो सुधर रही है और सब समूह का देन है ।

परहिया आदिम जनजाति के लोग पूरे देश भर में काफी कम है, समूह से जुड़कर परहिया महिलाओं एवं परिवारों के जीवन स्तर में बदलाव धीरे-धीरे हो रहा है ।

परहिया आदिम जनजाति के इस स्वयं सहायता समूह की महिलाएं अती गरीब हालत में थी, लेकिन समूह में जुड़ने के बाद हालात बदल रहे हैं, महिलाओं के सपनों को पंख मिला है । बदलाव की बयार का अंदाजा आप इस बात से लगा सकते हैं कि सारी महिलाएं पढ़ी लिखी नही होने के बावजूद भी अब साईन करना सीख चुकी है और अपने बच्चों को पढ़ा रही हैं ।

परहिया जनजाति के लोग हमारे राज्य के लिए विरासत हैं और आजीविका मिशन पूरे राज्य से गरीबी को दूर करने के लिए प्रतिबद्ध है । आज के अंक में बस इतना ही आजीविका संवाद की टीम को दिजिए इजाजत ..... अगले अंक में एक नए गाँव के समूह की नई कहानी के साथ होंगे हाजिर ।

दिल से

नाम	:	निरूपमा लोहरा
समूह का नाम	:	धनलक्ष्मी महिला समूह
गाँव	:	ऋद्धाटोली
प्रखण्ड	:	सिमडेगा
समूह से जुड़ने की तिथी	:	23.5.2014
छोटा ऋण (कुल राशि)	:	7481 रूपये (सात बार)
बड़ा ऋण (कुल राशि)	:	35,000 रूपये (दो बार)
प्रशिक्षण	:	सक्रिय महिला, पुस्तक संचालक, लाह की खेती का प्रशिक्षण
भाषा	:	नागपुरी, हिन्दी
रूचि	:	खाना बनाना
पसंद	:	घर सजाना
नापसंद	:	दूसरों की बात उनके पीछे करना
सबसे खुशी का पल	:	मेरी शादी
सबसे दुखद पल	:	एक रिश्तेदार का देहांत
समूह ने पूरा किया सपना	:	अपने परिवार की आजीविका के लिए पति को ऑटो खरीद कर देना।
जिंदगी में बदलाव	:	समूह से जुड़ने के बाद मुझे कभी महाजन से ऋण नही लेना पड़ा।
सपने जिनको पूरा करना है	:	अपना घर बनाना है।
पसंदीदा खाना	:	खीर-पूड़ी।
पसंदीदा रंग	:	मेहंदी।
पसंदीदा फिल्म	:	गदर-एक प्रेम कथा।
समूह, क्या है आपके लिए	:	समूह मेरा परिवार है।
एक ख्वाब	:	बेटा-बेटी को पढ़ा कर उनकी जिंदगी को खुशहाल बनाना।

हौसलों का ''समूह''

जीवन में कई बार हमें विपरीत समय का सामना करना पड़ता है। ऐसी परिस्थितियों में भी कुछ इंसान ऐसे होते हैं जो अपनी तमाम परेशानियों और हालात का सामना करते हुए आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं। ऐसे लोगों के लिए थोड़े समय के लिए ही परेशानियां तो होती हैं लेकिन यह वह लोग होते हैं जो जीवन की मुश्किलों का सामना करते हुए कामयाबी की इबारत लिखते हैं। इन्हीं लोगों में से एक हैं किरण बाखला।

संकटों के बीच सीखा जीवन गुजारना :- गुमला जिला की परसा पंचायत के बांसडीह की किरण बाखला ने अपनी तमाम मुश्किलों से लड़ना सीखा और आगे बढ़ती गयीं। किरण के जीवन में उस समय संकट के बादल घिर आये थे जब उनकी मां का निधन हो गया था। किरण बाखला बताती हैं कि जब वो 9वीं कक्षा में थी तभी उनकी मां का निधन हो गया था। इस बीच उनका घर-परिवार बिल्कुल अकेला हो गया था। लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखी और जीवन के तमाम मुश्किल परिस्थितियों के बीच दसवीं की परीक्षा पास किया। इसके बाद अपनी पढ़ाई छोड़ दी। घर की आर्थिक स्थिति को देखते हुए उनकी शादी कर दी गयी। जब किरण ने अपने ससुराल में अपना कदम रखा तब ससुराल में परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत खराब पायी। घर में अनाज की समस्या थी। उसी समय घर के अनाज को हाथियों ने भी नुकसान पहुंचाया था। इस संकट के बीच जब घर में खाने-पीने की समस्या आये दिन होने लगी। किरण ने इस नुकसान की भरपायी करने के रास्तों को ढूंढना प्रारंभ किया। उन्हें यह जानकारी मिली कि महिलाओं के आर्थिक-सामाजिक विकास के लिए स्वयं-सहायता समूह बनाये जा रहे थे। किरण ने भी स्वयं-सहायता समूह से जुड़ने का फैसला किया। वर्ष 2000 में स्वयं-सहायता समूह से जुड़ने का किया गया फैसला किरण के लिए वरदान साबित हुआ। पढ़ी-लिखी होने के कारण उन्हें समूह का लेखापाल चुना गया। लेखापाल की भूमिका में वे एक साल तक रहीं। समूह से जुड़ने के बाद किरण ने कई महत्वपूर्ण भूमिका को बखूबी निभाया। लेखापाल का काम करने के दौरान उन्हें जो भत्ते के रूप में पैसे मिलते थे उससे परिवार का गुजारा होता। उन्होंने अपनी पढ़ने की चाहत को बरकरार रखते हुए शिक्षण का प्रमाण पत्र भी प्राप्त किया। किरण ने स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को जागरूक करने के साथ-साथ गाँव के विकास की ओर भी ध्यान दिया। किरण को झारखंड राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन का सहयोग मिला जिससे उनकी प्रतिभा में और भी निखार आ गया। आज वह इन संस्थाओं के सहयोग से जिस तरह अपना गुजारा कर रही हैं वो काबिले-तारीफ है।

महिलाओं में भरा आत्मनिर्भरता का विश्वास :- किरण बताती हैं कि वर्ष 2006 में फेडरेशन का निर्माण किया गया था। फेडरेशन बनने से पहले घर की स्थिति में थोड़ा सुधार हुआ था लेकिन आवश्यकता बढ़ी थी इसलिए फेडरेशन की गतिविधियों पर अधिक समय देना पंसद किया। अपनी इस मसरूफियत के बावजूद उन्होंने अपना समय घर-परिवार को दिया। समय के साथ-साथ जिंदगी आगे बढ़ती गयी और दो बेटी के जन्म के बाद भी उन्होंने परिवार और काम में बाधा नहीं आने दी। जब फेडरेशन का निर्माण हो गया था जब उन्हें अक्सर क्षेत्र में भ्रमण के लिए जाना पड़ता था। किरण बताती हैं कि क्षेत्र भ्रमण के दौरान घर में परिवार के सदस्यों से अनबन भी हो जाता था और गाँव वालों में मेरे काम को लेकर बातें बनायी जाती थीं। लेकिन मेरे पति का मुझे और मेरे काम को हमेशा सहयोग मिला। महिलाओं के समूह के साथ उन्होंने गाँव की सामाजिक हालात को भी बदलने में अपनी पूरी मेहनत झोंक दी।

इस दौरान गाँव में नशा–पान को रोकने के लिए आंदोलन किये गये । घर–घर जाकर इस विषय पर लोगों में जागरूकता फैलाया गया । साथ ही नशा–पान का किसी भी तरह से विरोध करने वाले लोगों के साथ सख्ती से पेश आने की बात भी कही । इस दौरान किरण के विरोध में कई लोग खड़े हुए लेकिन महिलाओं की एकजुटता देखते हुए सबों ने अपना पैर पीछे खींच लिया । गाँव में शराब बनाने के कारोबार से जुड़े लोगों को बेहतर आजीविका तलाश करने की सलाह देते हुए किरण ने महिलाओं को समूह से जोड़ना प्रारंभ किया । आज इसका परिणाम हैं कि कई घरों में समूह की मदद के वजह से ही घर का चूल्हा जल पा रहा है, बच्चे स्कूल जा रहे हैं और गरीब परिवारों को बेहतर जिंदगी मिल सकी है । किरण मानती है कि समूह के कारण ही जिंदगी में बदलाव आ सका है । यदि समूह नहीं होता और आजीविका का सहयोग नहीं होता तो आज भी महाजन के चंगुल में ही फंसे होते । लेकिन समय बदला है, महिलाओं की सोच बदली है, आज वह खुद आत्मनिर्भर हो कर अपना परिवार कुशलता से चला रहीं हैं।

खूंटी के ग्रामीण युवाओं को ''आजीविका'' की सौगात

दीन दयाल उपाध्यान ग्रामीण कौशल्य योजना के तहत खूंटी जिले में तीन प्रशिक्षण केन्द्र का उद्घाटन माननीय मंत्री ग्रामीण विकास श्री नीलकंठ सिंह मुण्डा ने किया ये प्रशिक्षण केन्द्र ग्रामीण विकास विभाग के अंर्तगत झारखण्ड स्टेट लाईवलीहुड प्रमोशन सोसाईटी के द्वारा चयनित विभिन्न परियोजना कार्यान्वयन एजेंसी चला रही है ।

झारखण्ड के ग्रामीण विकास मंत्री माननीय श्री नीलकंठ सिंह मुण्डा ने प्रशिक्षण केन्द्रों के उद्घाटन के मौके पर कहा कि खूंटी में एक ही दिन में तीन कौशल विकास के लिए प्रशिक्षण केन्द्र का खुलना हमारे लिए सौभाग्य की बात है । खूंटी जिला झारखण्ड का एक पिछड़ा जिला है ऐसी कौशल विकास प्रशिक्षण की योजनाओं से रास्ते से भटक गए युवाओं को मुख्यधारा से जोड़ने में मदद मिलेगा । ग्रामीण विकास मंत्री ने इस योजना के तहत प्रशिक्षण पाने के लिए जुटे युवाओं को इस प्रशिक्षण का भरपूर लाभ उठाने की अपील की ।

श्री मुण्डा ने कहा कि खूंटी से हर साल कम से कम 2500 युवाओं को आजीविका मिशन के तहत प्रशिक्षित कर रोजगार से जोड़े जाएगें। आनेवाले दिनों में पूरे झारखण्ड में इस तरह का प्रशिक्षण केन्द्र खोला जाएगा, जिससे हमारे प्रधानमंत्री के स्कील इंडिया मिशन का सपना साकार होगा । इस मौके पर ग्रामीण विकास विभाग के प्रधान सचिव श्री एन एन सिन्हा ने प्रशिक्षुओं का हौसला बढ़ाया, श्री सिन्हा ने बताया कि पूरे राज्य में दो साल में करीब 67,000 युवाओं को प्रशिक्षण कर रोजगार से जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है । उद्घाटन किए गए कौशल प्रशिक्षण केन्द्र एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का विवरण निम्नाकित है ।

1. इंडिया कैन प्रशिक्षण केन्द्र : हॉस्पिटेलिटी, कस्टमर रिलेशन सर्विस, बीपीओ और डेटा इंट्री ऑपरेटर व ऑफिस अस्सिटेंट का प्रशिक्षण दिया जा रहा है ।
2. ग्रामीण विकास ट्रस्ट प्रशिक्षण केन्द्र : हॉस्पिटेलिटी, डीटीपी एवं कम्प्यूटर हार्डवेयर एवं रिटेल सेक्टर के लिए प्रशिक्षण दिया जाएगा ।
3. डॉन बास्को प्रशिक्षण : इलेक्ट्रीशियन, आईटी, नर्सिंग, ब्यूटिशियन का प्रशिक्षण दिया जा रहा है ।

उपरोक्त सारे प्रशिक्षण केन्द्र में आवासीय प्रशिक्षण की व्यवस्था है जिसके तहत सारे अत्याधुनिक आधारभूत संरचना यहां उपलब्ध है । उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए विशेष सचिव सह सीईओ जेएमएलपीएस श्री परितिष उपाध्याय ने इन प्रशिक्षण केन्द्र को अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस बताया । साथ ही इन एजेंसियों को 75 फिसदी प्रशिक्षुओं को रोजगार दिलाना अनिवार्य है । तो समूह की दीदी आप अपने गाँव के बेरोजगार युवाओं को अपने नजदीक के रोशनी एवं दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना के कौशल विकास प्रशिक्षण केन्द्र जरूर भेजें ताकि गाँव का हर बेरोजगार युवा प्रशिक्षण लेकर नौकरी कर सके ।

चित्रमय समाचार

सीएमएसए डी ब्रीफिंग मीटिंग के दौरान अपना अनुभव साझा करती हुई आजीविका कृषक मित्र

सहभागी तरीके से गरीबों की पहचान करने का प्रशिक्षण लेती इंटरनल सीआरपी ।

सामाजिक मानचित्र का चित्रांकन कर रही स्वयं सहायता समूह की सदस्य।

बैंक सखी का प्रशिक्षण प्राप्त करती स्वयं सहायता समूह की चयनित सदस्य ।

स्वयं सहायता समूह की बैठक के दौरान प्रार्थना करती उपहार महिला समूह की सदस्य ।

चित्रमय समाचार

एमसीपी फैसिलिटेर के रूप में चुनी गई समूह सदस्य सूक्ष्म ऋण योजना बनाने का प्रशिक्षण लेती हुई ।

प्रखण्ड स्तरीय महिला संगठन के अनुभवों को साझा करने के लिए आयोजित कार्याशाला में उपस्थित ग्रामीण महिलाएं

कुटियातु आजीविका महिला क्लस्टर संठन के उद्घाटन के मौके पर नृत्य करती स्वयं सहायता समूह की सदस्य ।

जिला परिषद् के सदस्यों को राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन से गाँवों में फैल रही खुशहाली से रूबरू कराती रेशमा देवी, बोस्को महिला स्वय सहायता समूह, नामकुम की सदस्य ।

इंटरनल सीआरपी महिलाओं को कम्यूनिकेशन स्किल पर प्रशिक्षण उपलब्ध कराया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में महिलाओं को वीडियो भी दिखाया गया।

सहभागी तरीके से गरीबों की पहचान : एक प्रयास

राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत गरीब परिवारों की पहचान करके उन्हें स्वयं सहायता समूह में संगठित किया जाता है । गरीबों की पहचान सहभागी विधी से किया जाता है जिसमें गाँव के लोग परियोजना के कर्मचारी के साथ मिलकर पूरे गाँव के गरीबों की पहचान करते हैं।

सहभागी तरीके से गरीबों की पहचान करने की प्रक्रिया को तीन चरणों में पूरा किया जाता है । सबसे पहले हम जिस गाँव में Participatory identification of poor अर्थात् सहभागिता से गरीबों की पहचान करना चाहते हैं, उस गाँव में संयुक्त भ्रमण किया जाता है ।

1. संयुक्त भ्रमण – गाँव में पहुंचने के बाद हर घर में घूम-घूम कर हर परिवार का परिचय लिया जाता है, जिसमें उनके समूह से जुड़ी होने की जानकारी सहित भी ली जाती है । वहीं संयुक्त भ्रमण के दौरान ही स्रोत व्यक्ति का चयन भी किया जाता है । जो की पूरे प्रक्रिया को गाँव में क्रियान्वित करता है । दूसरे चरण में सामाजिक मानचित्र तैयार किया जाता है ।

2. सामाजिक मानचित्र – सामाजिक मानचित्र गाँव के लोगों के सहयोग से स्रोत व्यक्ति द्वारा बनाया जाता है । इस मानचित्र के माध्यम से गाँव के हर घर एवं चुल्हे को दिखाया जाता है, साथ ही धार्मिक स्थल, स्कूल, शौचालय, नदी तालाब जैसे सार्वजनिक स्थल को भी दिखाया जाता है ।

3. तीसरे चरण में सामाजिक मानचित्र का विवरण प्रस्तुत होता है । इसके तहत उस गाँव के ग्राम सभा के दौरान उपस्थित सभी लोगों के सामने स्रोत व्यक्ति के द्वारा मानचित्र का प्रस्तुतीकरण किया जाता है और कई पहलुओं पर चर्चा करके नक्शा का संपादन किया जाता है । साथ ही परिवार से जुड़े कई प्रकार के सूचनाओं को इकट्ठा किया जाता है । जैसे विकलांगता, बीमारी से ग्रस्त हकदारी की स्थिति, व्यवसाय ।

इसके बाद आखिरी में समाज की टोकरी के माध्यम से गरीब की पहचान हो जाती है । समाज की टोकरी के तहत पूरे गाँव के सभी परिवार के नाम का कार्ड बनाया जाता है, फिर तीन टोकरी रखी जाती है, बड़ी, छोटी और मध्यम अकार की । फिर गाँव के लोगों को सहभागी बनाकर ये तय किया जाता है कि गरीब की परिभाषा क्या है । तीनों टोकरी के आगे परिभाषा लागया जाता है । जैसे छोटी टोकरी में अति गरीब लोगों का कार्ड रखा जाता है । मध्यम में गरीब और बड़ी टोकरी में जो गरीब नही है । बारी-बारी से हर परिवार के कार्ड के साथ चर्चा की जाती है और आम राय से किस टोकरी में रखा जाना है यह निर्धारित किया जाता है फिर दुबारा हर कार्ड पर चर्चा होती है ताकि कोई गरीब छुट न जाए । आखिर में छोटी और मध्यम टोकरी में जिसके कार्ड रखे जाते है उन्हें उपस्थित लोगों के माध्यम से गरीब मान लिया जाता है ।

योजना बनाओ अभियान

ग्रामीण विकास विभाग, झारखण्ड सरकार द्वारा राज्य के 195 पिछड़े प्रखण्डों मे वित्तीय वर्ष 2016-17 के लिए मनरेगा वार्षिक प्लान तेयार करने हेतु 'योजना बनाओ अभियान' का आयोजन किया गया है । इस अभियान के माध्यम से ग्रामीण अपने संसाधनो, आजीविकाओं व जरूरतों पर आधारित संपूर्ण ग्राम परियोजना बनाएंगे । इस अभियान में अति-गरीब की संपूर्ण आजीविका प्लानिंग पर विशेष ध्यान दिया जायेगा, प्लानिंग में ग्रामीण की सहायता करने के लिए पंचायत प्लानिंग टीमों का गठन होगा । समुदाय-आधारित महिला संगठनों की अभियान के अंतर्गत जागरूकता व प्लानिंग कार्यक्रमों में अहम् भूमिका रहेगी । यह अभियान ग्राम सभाओं व ग्राम पंचायतों में विक्रेद्रिकृत नियोजन की प्रक्रिया स्थापित करने में भी सहयोग करेगा ।

झारखण्ड के ग्रामीण परिवारों की आजीविका के मुख्य स्त्रोत खेती, वन उपज, पशु पालन एवं अकुशल मजदूरी हैं । अपनी आजीविका के लिए ग्रामीण अपने गाँव के प्राकृतिक संसाधनों जैसे जल, जंगल व जमीन पर निर्भर रहते हैं । झारखण्ड के अधिकांश किसान वर्षा-आधारित कृति करते हैं, परन्तु वर्षा के पानी को पर्याप्त मात्रा में न रोक पाने, सिंचाई के अभाव व प्राकृतिक संसाधनों जैसे मिट्टी की गुणवत्ता के घटाव के कारण कृषि-आधारित आजीविका में वृद्धि नहीं हो रही है ।

ग्रामीणों की कृषि-आधारित आजीविका के सवर्घन के लिए वर्षा के जल का संग्रह करना व प्राकृतिक संसाधनों का उचित प्रबंधन अतिआवश्यक है । ग्रामीण क्षेत्र के विकास के लिए यह जरूरी है कि उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों व गाँव की जरूरतों के अनुरूप ऐसी योजनाओं का चयन हो जिनसे ग्रामीण परिवारों की आजीविका में वृद्धि हो सके । सरकार के कई कल्याणकारी कार्यक्रम हैं, जैसे मनरेगा, आजीविका मिशन आदि जिनके माध्यम से ग्रामीण अपनी आजीविका की वृद्धि कर सकते हैं ।

योजना बनाओं अभियान के मुख्य उद्देश्य :-

- ❑ ग्रामीणों द्वारा उनके संसाधनों, आजीविकाओं व जरूरतों के अनुरूप संपूर्ण परियोजना बनाना ।
- ❑ गाँव के अति-गरीब परिवारों का जीवन स्तर बढ़ाने के लिए आजीविका आधारित योजनाएँ चयन करना ।
- ❑ गाँव की मूल-भूत सूविधाएँ जैसे पेयजल, स्कूल आँगनबाड़ी आदि की स्थिति का ग्रामीणों द्वारा मूल्यांकन करना ।
- ❑ ग्रामीणों के रोजगार की आवश्यकताओं के अनुसार 2016-17 के लिए मनरेगा श्रम बजट बनाना ।
- ❑ ग्राम सभाओं व ग्राम पंचायतों में विकेद्रिकृत नियोजना की प्रक्रिया स्थापित करना ।

अभियान की कुछ मूल बातें :-

- ❑ ग्राम पंचायत द्वारा ग्राम-स्तरीय प्लानिंग का संचालन किया जायेगा । पंचायत भवन में प्लानिंग सम्बंधित दस्तावेजीकरण किया जायेगा ।
- ❑ हर ग्राम पंचायत में एक पंचायत प्लानिंग टीम का गठन होगा जिसमें कम से कम पाँच सदस्य होंगे दो सामुदायित प्लानर (स्वयं सहायत समूह के सदस्य / CRP / मनरेगा श्रमिक जिन्हें प्लानिंग का अनुभव हो, आदि) दो वार्ड सदस्य एवं ग्रम रोजगार सेवक साथ ही उस पंचायत के युवा शिक्षक, अधिकारी इत्यादि भी इस पहल का हिस्सा बनेंगे ।
- ❑ राज्य में बने सैकड़ो महिला स्वयं-सहायता समूह/ग्राम संगठन/फेडरेशन इस अभियान द्वारा अपने गाँव की प्लानिंग में भाग लेंगे ।

अपील :- आप सभी समूह की दीदी से आग्रह है कि ज्यादा से ज्यादा तादाद में योजना बनाओ अभियान से जुड़कर अपने गाँव के विकास में अहम भूमिका निभाए । आपकी भागीदारी से आप अपने गाँव की कार्ययोजना बना पाएंगे। तो हो जाइए तैयार अब आपके मन के मुताबिक मनरेगा देगा रोजगार ।

झारखण्ड स्टेट लाईवलीहुड प्रमोशन सोसाईटी
(ग्रामीण विकास विभाग, झारखण्ड सरकार)
तृतीय तल, शांतिदीप टावर, रेडीयम रोड, रांची- 834001
: 0651-2360053/2360391 jslps.ranchi@gmail.com www.jslps.org facebook.com/onlineJSLPS
National Rural Livelihoods Mission
संपादक : कुमार विकास, कार्यक्रम प्रबंधक-मीडिया एवं संचार । ई-मेल : kmc@jslps.in
(झारखण्ड राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा स्वयं सहायता समूहों में आंतरिक वितरण के लिए)